अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 19.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा षष्टम् वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

गतागत–40

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें–(आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?) 24

(क) सम्यक् दृष्टि।

(ख) साधु।

(ग) संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय।

(घ) ज्योतिष्क व प्रथम देवलोक।

(ङ) चतुर्थ नरक।

(च) विभंगज्ञान।

(छ) अवधि दर्शन।

(ज) देवकुरू, उत्तरकुरू के यौगलिक में।

(झ) वासुदेव, प्रतिवासुदेव में।

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें–(आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?) 16

(क) नील लेश्या वाले नील लेश्या में जाएं तो?

(ख) तिर्यंच के भेदों का वर्णन करें।

(ग) मनुष्य व देवता के भेदों का वर्णन करें।

(घ) पद्म लेश्या वाले पद्म लेश्या में जाएं तो? मति अज्ञान से श्रुत अज्ञान में?

(ङ) भवनपति परमाधार्मिक, आदि जाति के देवों में?

(च) तेजोलेश्या वाले तेजोलेश्या में जाएं तो?

काय स्थिति–40

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 30

(क) सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?

(ख) बादर भाव पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?

(ग) स्त्रीवेदी की ज.उ. कायस्थिति व ज.उ. अंतर लिखें व उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है? वर्णन करें।

(घ) पुद्गल परावर्तन में आहारक शरीर का ग्रहण क्यों नहीं किया जाता है?

(ङ) विभंगज्ञानी की ज.उ. कायस्थिति व अंतर लिखें व उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है? वर्णन करें।

(च) काय योगी की ज.उ. कायस्थिति व अंतर लिखते हुए बताऐं कि ज.उ. कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(छ) चक्षुदर्शनी की ज.उ. कायस्थिति व अंतर लिखते हुए बताएं कि ज.उ. कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है।

(ज) लोभ कषायी की ज.उ. अंतर व कायस्थिति लिखते हुए बताएं कि ज.उ. कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है।

(झ) विभंगज्ञानी की ज.उ. कायस्थिति व अंतर लिखें व बताऐं कि उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

(ञ) स्त्रीवेदी के उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे पांच अपेक्षाओं में से प्रथम तीन अपेक्षाएं वर्णित करें।

(ट) मनयोगी वचनयोगी की जघन्य उ. कायस्थिति व अंतर लिखें व बताएं कि ज.उ. कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा होती है।

(ठ) सवेदी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व ज.उ. अंतर लिखते हुए बताएं कि सादि-सान्त की स्थिति किस प्रकार घटित हो सकती है, अपेक्षाओं सहित वर्णित करें।

प्र. 4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें– 10

(क) नील लेश्यी की ज.उ. कायस्थिति लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से है?

(ख) पुद्गल परावर्तन में किसका ग्रहण व परित्याग होता है?

(ग) नारक पर्याप्त की कायस्थिति लिखें।

(घ) त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय की उत्कृष्ट भवस्थिति लिखें।

(ङ) पर्याप्त लब्धि कितने समय तक रहती है?

(च) एक कषाय का उदय अंतर्मुहूर्त से अधिक क्यों नहीं रह सकता?

(छ) अंतर्मुहूर्त मिलकर कितना समय कहलाता है?

(ज) प्रत्येक शब्द का क्या तात्पर्य है?

(झ) संसार परीत से क्या तात्पर्य है?

(ञ) छद्मस्थ अनाहारक की ज.उ. कायस्थिति लिखें व ज. कायस्थिति किस अपेक्षा से है?

(ट) जीव की कायस्थिति ज. व उ. लिखें तथा उसका क्या तात्पर्य है?

(ठ) सामायिक चारित्र की जघन्य व उ. कायस्थिति कितनी है? ज. कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

गीतिका (पांच वर्षों की)–20

प्र. 5 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक-दो लाईन में लिखें– 4

(क) लज्जा दान किसे कहते हैं तथा किस नम्बर पर यह दान आता है?

(ख) सब खानों में.....नहीं होते, सब बगीचों में.....नहीं होता, जिहां तिहां..... ..... का ढेर नहीं होता है, सब सर्प.....नहीं होते।

(ग) दुर्गति का प्रमाण पत्र किसे कहा गया है?

(घ) क्षपक श्रेणी वाला किस वेद को, किस गुणस्थान को क्रम से क्षीण करता है तथा उसके पश्चात् वह किसे क्षीण करता है?

(ङ) किन कर्मों का क्षयोपशम निष्पन्न भाव किन गुणस्थानों तक होता है तथा किन कर्मों का क्षयोपशम निष्पन्न भाव नहीं होता?

(च) किन नियंठा के चारित्र के पर्यव समान होते हैं तथा वे किस तरह के चावलों के जैसे होते हैं?

प्र. 6 किन्हीं चार पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 16

(क) उपसम श्रेणिवंत.....दबावै रे।

(ख) पडिसेवी मूल.....नहिं होय।

(ग) मोह नो.....तामो रे।

(घ) पिण बाकी.....बात में ए।

(ङ) लेणात ने.....नाम ए।

(च) सावद करणी.....नांई रे।